B-3
L-20
Indian Society

20/12/2023

हिन्दू विवाह: एक धार्मिक संस्कार के रूप में
(Hindu Marriage : As a Sacrament)

A. भूमिका-

हिन्दू समाज एक धर्म प्रधान समाज रहा है, इसलिए इनमें विवाह संस्था भी धर्म से ओत-प्रोत रही है और हिन्दू विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना जाता है।

B. हिन्दू विवाह के धार्मिक संस्कारगत पक्ष-:

a. हिन्दू विवाह का मुख्य आधार धर्म है, क्योंकि-

1. हिन्दुओं में धार्मिक कर्तव्यों के पालन हेतु विवाह आवश्यक है।
2. पत्नी के साथ ही महायज्ञ संभव है।
3. बिना विवाह के संतान संभव नहीं है। बिना संतान के मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है।
4. गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु विवाह आवश्यक है।

b. हिन्दू विवाह में धार्मिक कर्मकाण्डों एवं नियमों की प्रधानता होती है-

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

1. विवाह हेतु पुरोहित आवश्यक
2. मंत्रोच्चारण आवश्यक
3. अग्नि के समक्ष फेरे (सप्तपदी)

c. हिन्दू विवाह ईश्वर इच्छित जन्म-जन्मान्तर का संबंध एवं विवाह-विच्छेद अमान्य होता है।

⇩

समीक्षा

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है - परन्तु आधुनिकता के वर्तमान दौर में हिन्दू विवाह में धार्मिक संस्कारगत पक्षों में व्यापक परिवर्तन आया है और आज विवाह धार्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु नहीं किया जाता है बल्कि जीवनसाथी, सहयोग एवं आनंदप्राप्ति हेतु किया जाता है। विवाह विच्छेद को वैधानिक मान्यता मिल जाने से हिन्दू विवाह अब अटूट बंधन नहीं रह गया है और विवाह विच्छेद की दर में वृद्धि हुई है।

परंतु उपरोक्त परिवर्तनों के बावजूद, परस्पर विश्वास तथा जीवनसाथी के साथ परस्पर प्रतिबद्धता विवाह का मूल तत्व कल भी था

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
© KHAN SIR

और आज भी बना हुआ है। विभिन्न कारणों से धार्मिक प्रभावों में कमी अवश्य आई है परंतु अभी भी विवाह का धार्मिक संस्कारगत पक्ष पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ है और आज भी अधिकांश विवाह धार्मिक रीति - रिवाज के अनुसार ही हो रहा है।

प्रेम विवाह, लिव-इन-रिलेशनशिप (LIR), विवाह - विच्छेद की घटनायें विवाह के धार्मिक संस्कारगत पक्ष पर प्रश्न चिन्ह अवश्य लगाती हैं, परन्तु यह एक बहुत सीमित घटना है और सामान्य रूप से आज भी - और तब तक विवाह साथ - साथ रहने एवं संतान प्राप्ति के उद्देश्य से किया जायेगा - तब तक हिन्दू विवाह की धार्मिक महत्व बना रहेगा, भले ही धार्मिक पक्षों में कुछ बदलाव आ जाये।

हिन्दू विवाह में प्रमुख निषेध

⇩

1. प्रवर बहिर्विवाह निषेध का नियम
2. सपिंड विवाह निषेध का नियम

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

3. सगोत्र विवाह निषेध का नियम
4. सप्रवर विवाह निषेध का नियम
5. ग्राम अंतर्विवाह निषेध का नियम

हिन्दू विवाह में आधुनिक परिवर्तन

1. धार्मिक संस्कारगत पक्षों में परिवर्तन
2. विवाह संबंधी निषेधों में परिवर्तन
3. विवाह के स्थायित्व में परिवर्तन
4. विवाह की आयु में परिवर्तन
5. विवाह संबंधी रीति-रिवाजों में परिवर्तन
6. विवाह में नवीन पद्धतियों का प्रचलन

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR